

Para 12

Sipara 12 of 30 · 170 Ayahs · Translation: Hindi

Hud

6

﴿ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ ﴾ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ﴿
﴿ كُلُّ ﴾ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿

और ज़मीन पर चलने वालों में कोई ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी खुदा के ज़िम्मे न हो और खुदा उनके ठिकाने और (मरने के बाद) उनके सौपे जाने की जगह (कब्र) को भी जानता है सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में मौजूद है

7

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ﴿ وَكَانَ عَرْشُهُ ﴾ عَلَى الْمَاءِ
لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿ وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ ﴿ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ ﴿ مُبِينٌ ﴿

और वह तो वही (कादिरे मुत्तलिक़) है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया और (उस वक्त) उसका अर्श (फलक नहुम) पानी पर था (उसने आसमान व ज़मीन) इस ग़रज़ से बनाया ताकि तुम लोगों को आजमाए कि तुममे ज्यादा अच्छी कार गुज़ारी वाला कौन है और (ऐ रसूल) अगर तुम (उनसे) कहोगे कि मरने के बाद तुम सबके सब दोबारा (कब्रों से) उठाए जाओगे तो काफ़िर लोग ज़रूर कह बैठेंगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है

8

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ ﴿ مَّعْدُودَةٍ ﴿ لَيَقُولَنَّ مَا يَحْبِسُهُ ﴿ ﴿ أَلَا يَوْمَ
يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا ﴿ بِهِ ﴿ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿

और अगर हम गिनती के चन्द रोज़ों तक उन पर अज़ाब करने में देर भी करें तो ये लोग (अपनी शरारत से) बेताम्मुल ज़रूर कहने लगेंगे कि (हाए) अज़ाब को कौन सी चीज़ रोक रही है सुन रखो जिस दिन इन पर अज़ाब आ पड़े तो (फिर) उनके टाले न टलेगा और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाया करते थे वह उनको हर तरह से घेर लेगा

9

وَلَيْنُ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ۖ ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ ۖ لَيَكْفُرُ ۚ

और अगर हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखाएं फिर उसको हम उससे छीन लें तो (उस वक्त) यकीनन बड़ा बेआस और नाशुका हो जाता है

10

وَلَيْنُ أَذَقْنَاهُ نِعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۖ إِنَّهُ ۖ لَفَرِحٌ فَخُورٌ

(और हमारी शिकायत करने लगता है) और अगर हम तकलीफ के बाद जो उसे पहुँचती थी राहत व आराम का जाएका चखाएं तो जरूर कहने लगता है कि अब तो सब सख्तियाँ मुझसे दफा हो गई इसमें शक नहीं कि वह बड़ा (जल्दी खुश) होने येखी बाज़ है

11

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۖ وَعَمِلُوا ۖ الصَّالِحَاتِ أُو۟لَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ وَأَجْرٌ ۖ كَبِيرٌ ۖ

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसे नहीं) ये वह लोग हैं जिनके वास्ते (खुदा की) बख्शिश और बहुत बड़ी (खरी) मज़दूरी है

12

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ ۖ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ ۖ بِهِ ۖ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا ۖ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ ۖ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ

तो जो चीज़ तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजी है उनमें से बाज़ को (सुनाने के वक्त) यायद तुम फक़त इस ख्याल से छोड़ देने वाले हो और तुम तंग दिल हो कि मुबादा ये लोग कह बैठें कि उन पर खज़ाना क्यों नहीं नाज़िल किया गया या (उनके तसदीक के लिए) उनके साथ कोई फरिश्ता क्यों न आया तो तुम सिर्फ (अज़ाब से) डराने वाले हो

13

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ ۖ مُفْتَرِيَتٍ ۖ وَادْعُوا ۖ مَنْ أَسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

तुम्हें उनका ख्याल न करना चाहिए और खुदा हर चीज़ का ज़िम्मेदार है क्या ये लोग कहते हैं कि उस शख्स (तुम) ने इस (क़ुरान) को अपनी तरफ से गढ़ लिया है तो तुम (उनसे साफ़ साफ़) कह दो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (ज्यादा नहीं) ऐसे दस सूरे अपनी तरफ से गढ़ के ले आओ

فَإِلَّا يَسْتَجِيبُوا؟ لَكُمْ فَأَعْلَمُوا؟ أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ؟ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ

और खुदा के सिवा जिस जिस के तुम्हे बुलाते बन पड़े मदद के वास्ते बुला लो उस पर अगर वह तुम्हारी न सुने तो समझ ले कि (ये कुरान) सिर्फ खुदा के इल्म से नाज़िल किया गया है और ये कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम अब भी इस्लाम लाओगे (या नहीं)

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَلَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ

नेकी करने वालों में से जो शरूष दुनिया की ज़िन्दगी और उसके रिज़क का तालिब हो तो हम उन्हें उनकी कारगुज़ारियों का बदला दुनिया ही में पूरा पूरा भर देते हैं और ये लोग दुनिया में घाटे में नहीं रहेंगे

أَوْ لَكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي آخِرَةِ إِلَّا النَّارُ؟ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلُّوا؟ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

मगर (हाँ) ये वह लोग हैं जिनके लिए आखिरत में (जहन्नुम की) आग के सिवा कुछ नहीं और जो कुछ दुनिया में उन लोगों ने किया धरा था सब अकारत (बर्बाद) हो गया और जो कुछ ये लोग करते थे सब मिटियामेट हो गया

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ؟ مِّن رَّبِّهِ؟ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ؟ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ؟ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا؟ وَرَحْمَةً؟ أَوْ لَكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ؟ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ؟ مِنَ الْأَحْزَابِ فَأَلْئِنَّ مَوْعِدَهُ؟ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ؟ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

तो क्या जो शरूष अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हो और उसके पीछे ही पीछे उनका एक गवाह हो और उसके क़बल मूसा की किताब (तौरैत) जो (लोगों के लिए) पेशवा और रहमत थी (उसकी तसदीक़ करती हो वह बेहतर है या कोई दूसरा) यही लोग सच्चे ईमान लाने वाले और तमाम फिरकों में से जो शरूष भी उसका इन्कार करे तो उसका ठिकाना बस आतिश (जहन्नुम) है तो फिर तुम कहीं उसकी तरफ से शक़ में न पड़े रहना, बेशक़ ये कुरान तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है मगर बहुतेरे लोग ईमान नहीं लाते

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ
الْأَشْهَدُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا ۚ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ

और ये जो शरूख खुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाँधे उससे ज्यादा ज़ालिम कौन होगा ऐसे लोग अपने परवरदिगार के हुज़ूर में पेश किए जाएंगे और गवाह इज़हार करेंगे कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूठ (बोहतान) बाँधा था सुन रखो कि ज़ालिमों पर खुदा की फिटकार है

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ

जो खुदा के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कज़ी (टेढ़ा पन) निकालना चाहते हैं और यही लोग आखिरत के भी मुन्किर हैं

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۚ
يُضَعَّفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ

ये लोग रुए ज़मीन में न खुदा को हरा सकते हैं और न खुदा के सिवा उनका कोई सरपरस्त होगा उनका अज़ाब दूना कर दिया जाएगा ये लोग (हसद के मारे) न तो (हक़ बात) सुन सकते थे न देख सकते थे

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

ये वह लोग हैं जिन्होंने कुछ अपना ही घाटा किया और जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ (झूठी बातें) ये लोग करते थे (क़यामत में सब) उन्हें छोड़ के चल होगी

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخِسِرُونَ

इसमें शक़ नहीं कि यही लोग आखिरत में बड़े घाटा उठाने वाले होंगे

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا ۚ إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और अपने परवरदिगार के सामने आजज़ी से झुके यही लोग जन्नती हैं कि ये बेहश्त में हमेशा रहेंगे

﴿؟﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَى وَالْأَصْمِ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ﴿؟﴾ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ﴿؟﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

(काफिर, मुसलमान) दोनों फरीक की मसल अन्धे और बहरे और देखने वाले और सुनने वाले की सी है क्या ये दोनो मसल में बराबर हो सकते हैं तो क्या तुम लोग ग़ौर नहीं करते और हमने नूह को ज़रूर उन की क़ौम के पास भेजा

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ﴿؟﴾ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ ﴿؟﴾ مُّبِينٌ

(और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं तो तुम्हारा (अज़ाबे खुदा से) सरीही धमकाने वाला हूँ

أَنْ لَا تَعْبُدُوا ﴿؟﴾ إِلَّا اللَّهَ ﴿؟﴾ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿؟﴾

(और) ये (समझता हूँ) कि तुम खुदा के सिवा किसी की परसतिश न करो मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन (क़यामत) के अज़ाब से डराता हूँ

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿؟﴾ مِنْ قَوْمِهِ ﴿؟﴾ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ أَتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَأَيْنَا بِادِي الرّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ﴿؟﴾ بَلْ نَحْنُكُمْ كَاذِبِينَ

तो उनके सरदार जो काफ़िर थे कहने लगे कि हम तो तुम्हें अपना ही सा एक आदमी समझते हैं और हम तो देखते हैं कि तुम्हारे पैरोकार हुए भी हैं तो बस सिर्फ हमारे चन्द रज़ील (नीच) लोग (और वह भी बे सोचे समझे सरसरी नज़र में) और हम तो अपने ऊपर तुम लोगों की कोई फज़ीलत नहीं देखते बल्कि तुम को झूठा समझते हैं

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ﴿؟﴾ مِّن رَّبِّي وَءَاتَنِي رَحْمَةً ﴿؟﴾ مِّنْ عِنْدِهِ ﴿؟﴾ فَعُمِيتْ عَلَيْكُمْ أَنْزَلُكُمْوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كُرْهُونَ

(नूह ने) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमने ये समझा है कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और उसने अपनी सरकार से रहमत (नुबूवत) अता फरमाई और वह तुम्हें सुझाई नहीं देती तो क्या मैं उसको (ज़बरदस्ती) तुम्हारे गले मंढ़ सकता हूँ

وَيَقَوْمٌ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَمَا أَنَا ۚ بِطَارِدِ الَّذِينَ
ءَامَنُوا ۚ إِنَّهُمْ مُلْقُوا ۚ رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرَأَيْتُمْ قَوْمًا ۚ تَجْهَلُونَ

और तुम हो कि उसको नापसन्द किए जाते हो और ऐ मेरी क़ौम मैं तो तुमसे इसके सिले में कुछ माल का तालिब नहीं मेरी मज़दूरी तो सिर्फ़ खुदा के ज़िम्मे है और मैं तो तुम्हारे कहने से उन लोगों को जो ईमान ला चुके हैं निकाल नहीं सकता (क्योंकि) ये लोग भी ज़रूर अपने परवरदिगार के हुज़ूर में हाज़िर होंगे मगर मैं तो देखता हूँ कि कुछ तुम ही लोग (नाहक़) जिहालत करते हो

وَيَقَوْمٌ مَّن يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن طَرَدْتُهُمْ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

और मेरी क़ौम अगर मैं इन (बेचारे ग़रीब) (ईमानदारों) को निकाल दूँ तो खुदा (के अज़ाब) से (बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा तो क्या तुम इतना भी ग़ौर नहीं करते

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ ۚ وَلَا أَقُولُ
لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۚ إِنِّي إِذًا ۚ
لَّمِنَ الظَّالِمِينَ

और मैं तो तुमसे ये नहीं कहता कि मेरे पास खुदाई खज़ाने हैं और न (ये कहता हूँ कि) मैं ग़ैब वाँ हूँ (ग़ैब का जानने वाला) और ये कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नज़रों में ज़लील हैं उन्हें मैं ये नहीं कहता कि खुदा उनके साथ हरगिज़ भलाई नहीं करेगा उन लोगों के दिलों की बात खुदा ही खूब जानता है और अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं भी यक़ीनन ज़ालिम हूँ

قَالُوا ۚ يَنْوَحُ قَدْ جَدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدْلَنَا فَأَتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

वह लोग कहने लगे ऐ नूह तुम हम से यक़ीनन झगड़े और बहुत झगड़े फिर तुम सच्चे हो तो जिस (अज़ाब) की तुम हमें धमकी देते थे हम पर ला चुको

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ

नूह ने कहा अगर चाहेगा तो बस खुदा ही तुम पर अज़ाब लाएगा और तुम लोग किसी तरह उसे हरा नहीं सकते और अगर मैं चाहूँ तो तुम्हारी (कितनी ही) ख़ैर ख्वाही (भलाई) करूँ

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أُنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ ۖ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

अगर खुदा को तुम्हारा बहकाना मंज़ूर है तो मेरी खैर खाही कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आ सकती वही तुम्हारा परवरदिगार है और उसी की तरफ तुम को लौट जाना है

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ ۖ فَعَلَىٰ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ ۖ مِمَّا تُجْرِمُونَ

(ऐ रसूल) क्या (कुफ़ारे मक्का भी) कहते हैं कि कुरान को उस (तुम) ने गढ़ लिया है तुम कह दो कि अगर मैंने उसको गढ़ा है तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर होगा और तुम लोग जो (गुनाह करके) मुजरिम होते हो उससे मैं बरीउल ज़िम्मा (अलग) हूँ

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ ۖ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ ءَامَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا ۖ يَفْعَلُونَ

और नूह के पास ये 'वही' भेज दी गई कि जो ईमान ला चुका उनके सिवा अब कोई शरूख तुम्हारी क्रौम से हरगिज़ ईमान न लाएगा तो तुम खाहमा खाह उनकी कारस्तानियों का (कुछ) ग़म न खाओ

وَأَصْنَعُ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا وَلَا تُخْطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ ۖ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ

और (बिस्मिल्लाह करके) हमारे रुबरु और हमारे हुकम से कश्ती बना डालो और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे सिफारिश न करना क्योंकि ये लोग ज़रूर डुबा दिए जाएँगे

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ ۖ مِنْ قَوْمِهِ ۖ سَخِرُوا ۖ مِنْهُ ۖ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا ۖ مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ

और नूह कश्ती बनाने लगे और जब कभी उनकी क्रौम के सरबर आवुरदा लोग उनके पास से गुज़रते थे तो उनसे मसखरापन करते नूह (जवाब में) कहते कि अगर इस वक्त तुम हमसे मसखरापन करते हो तो जिस तरह तुम हम पर हँसते हो हम तुम पर एक वक्त हँसेंगे

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ ۚ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ ۚ مُقِيمٌ

और तुम्हें अनकरीब ही मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है कि (दुनिया में) उसे रुसवा कर दे और किस पर (क़यामत में) दाइमी अज़ाब नाज़िल होता है

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ ۚ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ ءَامَنَ ۚ وَمَا ءَامَنَ مَعَهُ ۚ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ

यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा और तन्नूर से जोश मारने लगा तो हमने हुक्म दिया (ऐ नूह) हर किस्म के जानदारों में से (नर मादा का) जोड़ा (यानि) दो दो ले लो और जिस (की) हलाकत (तबाही) का हुक्म पहले ही हो चुका हो उसके सिवा अपने सब घर वाले और जो लोग ईमान ला चुके उन सबको कश्ती (नाँव) में बैठा लो और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लोग लाए थे

ۚ وَقَالَ ارْكَبُوا ۚ فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرً ۚ لَهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

और नूह ने (अपने साथियों से) कहा बिस्मिल्ला मज़रीहा मुरसाहा (खुदा ही के नाम से उसका बहाओ और ठहराओ है) कश्ती में सवार हो जाओ बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ ۚ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ ۚ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ ۚ يٰبُنَىٰ ۚ اٰرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُن مَعَ الْكَافِرِينَ

और कश्ती है कि पहाड़ों की सी (ऊँची) लहरों में उन लोगों को लिए हुए चली जा रही है और नूह ने अपने बेटे को जो उनसे अलग थलग एक गोशे (कोने) में था आवाज़ दी ऐ मेरे फरज़न्द हमारी कश्ती में सवार हो लो और काफ़िरों के साथ न रह

قَالَ سَأُوۡىٰٓ إِلَىٰ جَبَلٍ ۚ يَّعَصِمُنِي مِنَ الْمَآءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ

(मुझे माफ़ कीजिए) मैं तो अभी किसी पहाड़ का सहारा पकड़ता हूँ जो मुझे पानी (में डूबने) से बचा लेगा नूह ने (उससे) कहा (अरे कम्बख्त) आज खुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर खुदा ही जिस पर रहम फरमाएगा और (ये बात हो रही थी कि) यकायक दोनो बाप बेटे के दरमियान एक मौज हाएल हो गई और वह डूब कर रह गया

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ أَقْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ ۖ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और (ग़ैब खुदा की तरफ से) हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी जज्व (शोख) करे और ऐ आसमान (बरसने से) थम जा और पानी घट गया और (लोगों का) काम तमाम कर दिया गया और कशती जो वही (पहाड़) पर जा ठहरी और (चारों तरफ) पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोगों को (खुदा की रहमत से) दूरी हो

وَنَادَى نُوحٌ ۖ رَبَّهُ ۖ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِن أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ

और (जिस वक्त नूह का बेटा ग़रक (डूब) हो रहा था तो नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और अर्ज़ की ऐ मेरे परवरदिगार इसमें तो शक़ नहीं कि मेरा बेटा मेरे अहल (घर वालों) में शामिल है और तूने वायदा किया था कि तेरे अहल को बचा लूँगा) और इसमें शक़ नहीं कि तेरा वायदा सच्चा है और तू सारे (जहान) के हाकिमों से बड़ा हाकिम है

قَالَ يَنْحُوحُ إِنَّهُ ۖ لَيْسَ مِن أَهْلِكَ ۖ إِنَّهُ ۖ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلْنِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ ۖ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعْظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ

(तू मेरे बेटे को नजात दे) खुदा ने फरमाया ऐ नूह तुम (ये क्या कह रहे हो) हरगिज़ वह तुम्हारे अहल में शामिल नहीं वह बेशक बदचलन है (देखो जिसका तुम्हें इल्म नहीं है मुझसे उसके बारे में (दरखास्त न किया करो और नादानों की सी बातें न करो) नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे परवरदिगार मैं तुझ ही से पनाह माँगता हूँ कि जिस चीज़ का मुझे इल्म न हो मैं उसकी दरखास्त करूँ

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ ۖ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخُسْرِينَ

और अगर तू मुझे (मेरे कसूर न बख़्श देगा और मुझ पर रहम न खाएगा तो मैं सख्त घाटा उठाने वालों में हो जाऊँगा (जब तूफान जाता रहा तो) हुक्म दिया गया ऐ नूह हमारी तरफ से सलामती और उन बरकतों के साथ कशती से उतरो

48

قِيلَ يٰ نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ ۖ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ اُمَمٍ ۖ مِّمَّنْ مَعَكَ ۗ وَامْرَأَتُكَ ۙ

سَمَتَعَهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيمٌ ۙ

जो तुम पर हैं और जो लोग तुम्हारे साथ हैं उनमें से न कुछ लोगों पर और (तुम्हारे बाद) कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें हम थोड़े ही दिन बाद बहरावर करेंगे फिर हमारी तरफ से उनको दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा

49

تِلْكَ مِنْ أَذَىٰ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ
هَذَا ۖ فَاصْبِرْ ۚ إِنَّ الْعُقَبَةَ لِلْمُتَّقِينَ

(ऐरसूल) ये ग़ैब की चन्द खबरे हैं जिनको तुम्हारी तरफ वही के ज़रिए पहुँचाते हैं जो उसके क़बल न तुम जानते थे और न तुम्हारी क़ौम ही (जानती थी) तो तुम सब करो इसमें शक़ नहीं कि आख़िरत (की खूबियाँ) परहेज़गारों ही के वास्ते हैं

50

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودٌ ﴿٩١﴾ قَالَ يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهٍ غَيْرُهُ ﴿٩٢﴾ ۖ إِنَّ

और (हमने) क़ौमे आद के पास उनके भाई हूद को (पैग़म्बर बनाकर भेजा और) उन्होंने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम खुदा ही की परसतिश करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तुम बस निरे इफ़तेरा परदाज़ (झूठी बात बनाने वाले) हो

51

يُقَوْمَ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنِ اجْتَرَىٰ إِلَّا عَلَىٰ الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٩﴾

ऐ मेरी कौम मै उस (समझाने पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस उस शरूख के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते

52

وَيَقُومِ اسْتَغْفِرُوا؟ رَيْكُمْ ثُمَّ تُوْبُوا؟ إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا؟^١ وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا؟ مُجْرِمِينَ

और ऐ मेरी क़ौम अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत की दुआ माँगें फिर उसकी बारगाह में अपने (गुनाहों से) तौबा करो तो वह तुम पर मूसलाधार मेह आसमान से बरसाएगा खुशक साली न होगी और तुम्हारी क़ूवत (ताक़त) में और क़ूवत बढ़ा देगा और मुजरिम बन कर उससे मुँह न मोड़ें

قَالُوا ۚ يَهُودُ مَا جِئْنَا بِبَيِّنَةٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ
بِمُؤْمِنِينَ

वह लोग कहने लगे ऐ हूद तुम हमारे पास कोई दलील लेकर तो आए नहीं और तुम्हारे कहने से अपने खुदाओं को तो छोड़ने वाले नहीं और न हम तुम पर ईमान लाने वाले हैं

إِنْ نَقُولُ إِلَّا أَعْتَرَكْ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ ۚ ۚ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُوا ۚ أَنِّي
بَرِيءٌ ۚ مِمَّا تُشْرِكُونَ

हम तो बस ये कहते हैं कि हमारे खुदाओं में से किसने तुम्हें मजनून (दीवाना) बना दिया है (इसी वजह से तुम) बहकी बहकी बातें करते हो हूद ने जवाब दिया बेशक मैं खुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम खुदा के सिवा (दूसरों को) उसका शरीक बनाते हो

مِنْ دُونِهِ ۚ ۚ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ۚ ثُمَّ لَا تُنْظِرُونَ

इसमें मैं बेज़ार हूँ तो तुम सब के सब मेरे साथ मक्कारी करो और मुझे (दम मारने की) मोहलत भी न दो तो मुझे परवाह नहीं

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ ۚ إِنَّ رَبِّي
عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ

मैं तो सिर्फ़ खुदा पर भरोसा रखता हूँ जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है और रुए ज़मीन पर जितने चलने वाले हैं सबकी चोटी उसी के साथ है इसमें तो शक़ ही नहीं कि मेरा परवरदिगार (इन्साफ़ की) सीधी राह पर है

فَإِنْ تَوَلَّوْا ۚ فَقَدْ أْبَلَّغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ ۚ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا
تَضُرُّونَهُ ۚ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ۚ

इस पर भी अगर तुम उसके हुक्म से मुँह फेरे रहो तो जो हुक्म दे कर मैं तुम्हारे पास भेजा गया था उसे तो मैं यक़ीनन पहुँचा चुका और मेरा परवरदिगार (तुम्हारी नाफरमानी पर तुम्हें हलाक करें) तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौम को तुम्हारा जानशीन करेगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते इसमें तो शक़ नहीं है कि मेरा परवरदिगार हर चीज़ का निगेहबान है

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مَعَهُ ۖ بِرَحْمَةٍ ۖ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۖ

और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने हूद को और जो लोग उसके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दिया और उन सबको सख्त अज़ाब से बचा लिया

وَتِلْكَ ءَعَادُ ۖ ۖ جَحَدُوا ۖ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا ۖ رُسُلَهُ ۖ وَاتَّبَعُوا ۖ أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۖ

(ऐ रसूल) ये हालात क्रौमे आद के हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया और उसके पैगम्बरों की नाफरमानी की और हर सरकश (दुश्मने खुदा) के हुक्म पर चलते रहें

وَاتَّبَعُوا ۖ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ أَلَا إِنَّ ءَعَادَ ۖ كَفَرُوا ۖ رَبَّهُمْ ۖ أَلَا بُعْدَ ۖ لِّلْعَادِ ۖ قَوْمِ هُودٍ ۖ

और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) देख क्रौमे आद ने अपने परवरदिगार का इन्कार किया देखो हूद की क्रौमे आद (हमारी बारगाह से) धुत्कारी पड़ी है

ۖ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَلِحًا ۖ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا ۖ اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ ۖ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَأَسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوْبُوا ۖ إِلَيْهِ ۖ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ ۖ مُّجِيبٌ ۖ

और (हमने) क्रौमे समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैगम्बर बनाकर भेजा) तो उन्होंने (अपनी क्रौम से) कहा ऐ मेरी क्रौम खुदा ही की परसतिश करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं उसी ने तुमको ज़मीन (की मिट्टी) से पैदा किया और तुमको उसमें बसाया तो उससे मज़फिरत की दुआ माँगों फिर उसकी बारगाह में तौबा करो (बेशक मेरा परवरदिगार (हर शख्स के) करीब और सबकी सुनता और दुआ कुबूल करता है

قَالُوا ۖ يَصْلِحْ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا ۖ اِقْبَلْ هَذَا ۖ اَتَنْهَيْنَا اَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اَبَاؤُنَا
وَاِنَّا لَفِي شَكٍّ ۖ مِّمَّا تَدْعُونَا اِلَيْهِ مُرِيبٌ ۖ

वह लोग कहने लगे ऐ सालेह इसके पहले तो तुमसे हमारी उम्मीदें वाबस्ता थी तो क्या अब तुम जिस चीज़ की परसतिश हमारे बाप दादा करते थे उसकी परसतिश से हमें रोकते हो और जिस दीन की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम तो उसकी निस्वत ऐसे शक़ में पड़े हैं

قَالَ يَقَوْمِ اَرَأَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ۖ مِّنْ رَبِّي وَءَاتَنِي مِنْهُ رَحْمَةً ۖ فَمَنْ يَنْصُرُنِي
مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهُ ۖ ۚ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۖ

कि उसने हैरत में डाल दिया है सालेह ने जवाब दिया ऐ मेरी क़ौम भला देखो तो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपनी (बारगाह) मे रहमत (नबूवत) अता की है इस पर भी अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो खुदा (के अज़ाब से बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा-फिर तुम सिवा नुक़सान के मेरा कुछ बढ़ा दोगे नहीं

وَيَقَوْمِ هَذِهِ ۖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ ءَايَةٌ ۖ فَذَرْوَهَا تَأْكُلْ فِى اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمْسُوهَا بِسُوءٍ ۖ
فِيَاخُذْكُمْ عَذَابٌ ۖ قَرِيبٌ ۖ

ऐ मेरी क़ौम ये खुदा की (भेजी हुई) ऊँटनी है तुम्हारे वास्ते (मेरी नबूवत का) एक मौजिज़ा है तो इसको (उसके हाल पर) छोड़ दो कि खुदा की ज़मीन में (जहाँ चाहे) खाए और उसे कोई तकलीफ न पहुँचाओ

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا ۖ فِى دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ اَيَّامٍ ۖ ۚ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۖ

(वरना) फिर तुम्हें फौरन ही (खुदा का) अज़ाब ले डालेगा इस पर भी उन लोगों ने उसकी कूँचे काटकर (मार) डाला तब सालेह ने कहा अच्छा तीन दिन तक (और) अपने अपने घर में चैन (उड़ा लो)

فَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مَعَهُ ۖ بِرَحْمَةٍ ۖ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمٍ ۚ ۚ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ

यही खुदा का वायदा है जो कभी झूठा नहीं होता फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने सालेह और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दी और उस दिन की रुसवाई से बचा लिया इसमें शक़ नहीं कि तेरा परवरदिगार ज़बरदस्त ग़ालिब है

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا ۖ فِي دِيرِهِمْ جُثَمِينَ

और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक सख्त चिघाड़ ने ले डाला तो वह लोग अपने अपने घरों में औंधें पड़े रह गये

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا ۖ فِيهَا ۖ أَلَا إِنَّ ثَمُودَ ۖ كَفَرُوا ۖ رَبَّهُمْ ۖ أَلَا بُعْدٌ ۖ لِثَمُودَ

और ऐसे मर मिटे कि गोया उनमें कभी बसे ही न थे तो देखो क्रौमे समूद ने अपने परवरदिगार की नाफरमानी की और (सज़ा दी गई) सुन रखो कि क्रौमे समूद (उसकी बारगाह से) धुत्कारी हुई है

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا ۖ سَلَامٌ ۖ أ ۖ قَالَ سَلَامٌ ۖ ۖ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيزٍ ۖ

और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) इबराहीम के पास खुशखबरी लेकर आए और उन्होंने (इबराहीम को) सलाम किया (इबराहीम ने) सलाम का जवाब दिया फिर इबराहीम एक बछड़े का भुना हुआ (गोشت) ले आए

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ ۖ قَالُوا ۖ لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ لُّوطٍ ۖ

(और साथ खाने बैठें) फिर जब देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ नहीं बढ़ते तो उनकी तरफ से बदगुमान हुए और जी ही जी में डर गए (उसको वह फरिश्ते समझे) और कहने लगे आप डरे नहीं हम तो क्रौम लूत की तरफ (उनकी सज़ा के लिए) भेजे गए हैं

وَأَمْرَأَتُهُ ۖ قَائِمَةٌ ۖ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ

और इबराहीम की बीबी (सायरा) खड़ी हुई थी वह (ये खबर सुनकर) हँस पड़ी तो हमने (उन्हें फरिश्तों के जरिए से) इसहाक के पैदा होने की खुशखबरी दी और इसहाक के बाद याकूब की

قَالَتْ يُؤْتِلَنِي ۖ أَلِدُ وَأَنَا ۖ عَجُوزٌ ۖ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ

वह कहने लगी ऐ है क्या अब मैं बच्चा जनने बैटूंगी मैं तो बुढ़िया हूँ और ये मेरे मियाँ भी बूढ़े हैं ये तो एक बड़ी ताज्जुब खेज़ बात है

قَالُوا؟ أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ؟ رَحِمْتُ اللَّهَ وَبَرَكَتُهُ؟ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ؟ إِنَّهُ؟
حَمِيدٌ؟ مَجِيدٌ؟

वह फरिश्ते बोले (हाए) तुम खुदा की कुदरत से ताज्जुब करती हो ऐ अहले बैत (नबूवत) तुम पर खुदा की रहमत और उसकी बरकते (नाज़िल हो) इसमें शक नहीं कि वह काबिल हम्द (वासना) बुज़ुर्ग हैं

فَلَمَّا زَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجْدِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ

फिर जब इबराहीम (के दिल) से खौफ जाता रहा और उनके पास (औलाद की) खुशखबरी भी आ चुकी तो हम से क्रौमे लूत के बारे में झगड़ने लगे

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّهٌ؟ مُنِيبٌ؟

बेशक इबराहीम बुर्दबार नरम दिल (हर बात में खुदा की तरफ) रुजू (ध्यान) करने वाले थे

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا؟ إِنَّهُ؟ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ؟ وَإِنَّهُمْ لَأَتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ
مَرْدُودٍ؟

(हमने कहा) ऐ इबराहीम इस बात में हट मत करो (इस बार में) जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार का था वह क़तअन आ चुका और इसमें शक नहीं कि उन पर ऐसा अज़ाब आने वाले वाला है

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا؟ سِئَاءَ بِهِمْ وضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا؟ وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ؟

जो किसी तरह टल नहीं सकता और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते (लड़को की सूरत में) लूत के पास आए तो उनके ख्याल से रज़ीदा हुए और उनके आने से तंग दिल हो गए और कहने लगे कि ये (आज का दिन) सख्त मुसीबत का दिन है

وَجَاءَهُۥ ۚ قَوْمُهُ ۚ يَهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَقَوْمِ
هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۚ أَلَيْسَ مِنْكُمْ
رَجُلٌ ۚ رَّشِيدٌ ۚ

और उनकी क्रौम (लड़को की आवाज़ सुनकर बुरे इरादे से) उनके पास दौड़ती हुई आई और ये लोग उसके क़बल भी बुरे काम किया करते थे लूत ने (जब उनको) आते देखा तो कहा ऐ मेरी क्रौम ये मारी क्रौम की बेटियाँ (मौजूद हैं) उनसे निकाह कर लो ये तुम्हारी वास्ते जायज़ और ज्यादा साफ सुथरी हैं तो खुदा से डरो और मुझे मेरे मेहमान के बारे में रुसवा न करो क्या तुम में से कोई भी समझदार आदमी नहीं है

قَالُوا ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ

उन (कम्बख्तो) न जवाब दिया तुम को खूब मालूम है कि तुम्हारी क्रौम की लड़कियों की हमें कुछ हाज़त (ज़रूरत) नहीं है और जो बात हम चाहते हैं वह तो तुम खूब जानते हो

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوَىٰ إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ۚ

लूत ने कहा काश मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की क़वत होती या मैं किसी मज़बूत क़िले में पनाह ले सकता

قَالُوا ۚ يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَن يَصِلُوا ۚ إِلَيْكَ ۚ فَاسْرِبِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتَكَ ۚ إِنَّهُ ۚ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ
الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۚ

वह फरिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे परवरदिगार के भेजे हुए (फरिश्ते हैं तुम घबराओ नहीं) ये लोग तुम तक हरगिज़ (नहीं) पहुँच सकते तो तुम कुछ रात रहे अपने लड़कों बालों समेत निकल भागो और तुममें से कोई इधर मुड़ कर भी न देखे मगर तुम्हारी बीबी कि उस पर भी यक़ीनन वह अज़ाब नाज़िल होने वाला है जो उन लोगों पर नाज़िल होगा और उन (के अज़ाब का) वायदा बस सुबह है क्या सुबह करीब नहीं

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً ۖ مِّن سِجِّيلٍ ۚ
مَّنْضُودٍ ۚ

फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने (बस्ती की ज़मीन के तबके) उलट कर उसके ऊपर के हिस्से को नीचे का बना दिया और उस पर हमने खरन्जेदार पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए

مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۚ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ۚ

जिन पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशान बनाए हुए थे और वह बस्ती (उन) ज़ालिमों (कुफ़ारे मक्का) से कुछ दूर नहीं

ۚ وَإِلَىٰ مَدِينِ أَخَاهُمْ شُعَيْبٌ ۚ ا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا ۚ اَللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ ا ۚ
وَلَا تَنقُصُوا ۚ اَلْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ ا ۚ اِنِّیْۤ اَرٰیْكُمْ بِخٰیِرٍ ۚ وَاِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ
یَوْمٍ ۚ مُحِیْطٍ ۚ

और हमने मदयन वालों के पास उनके भाई शुएब को पैग़म्बर बना कर भेजा उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम खुदा की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं और नाप और तौल में कोई कमी न किया करो मैं तो तुम को आसूदगी (खुशहाली) में देख रहा हूँ (फिर घटाने की क्या ज़रूरत है) और मैं तो तुम पर उस दिन के अज़ाब से डराता हूँ जो (सबको) घेर लेगा

وَيَقَوْمِ اَوْفُوا ۚ اَلْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا ۚ اَلنَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَلَا
تَعْتُوا ۚ ا ۚ فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ

और ऐ मेरी क़ौम पैमाने और तराजू तृन्साफ़ के साथ पूरे पूरे रखा करो और लोगों को उनकी चीज़े कम न दिया करो और रुप ज़मीन में फसाद न फैलाते फ़िरो

بَقِیَّتُ اللّٰهِ خَیْرٌ ۚ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ وَمَا اَنَاۡ ۚ ا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ۚ

अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो खुदा का बक़िया तुम्हारे वास्ते कही अच्छा है और मैं तो कुछ तुम्हारा निगेहबान नहीं

قَالُوا ۖ يَشْعِيبُ اَصْلَوْتَكَ تَأْمُرُكَ اَنْ نَّتْرِكَ مَا يَعْبُدُ ءَابَاؤُنَا اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِىْ اَمْوَالِنَا مَا نَشَآءُ ۚ ۚ اِنَّكَ لَآَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ

वह लोग कहने लगे ऐ शुएब क्या तुम्हारी नमाज़ (जिसे तुम पढ़ा करते हो) तुम्हें ये सिखाती है कि जिन (बुतों) की परसतिश हमारे बाप दादा करते आए उन्हें हम छोड़ बैठें या हम अपने मालों में जो कुछ चाहे कर बैठें तुम ही तो बस एक बुर्दबार और समझदार (रह गए) हो

قَالَ يَقُوْمُ اَرَعَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ۚ مِّنْ رَبِّىْ وَرَزَقَنِىْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ ۚ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَا اَنْهَيْكُمْ عَنْهُ ۚ ۚ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اُسْتَطَعْتُ ۚ ۚ وَمَا تَوْفِيقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ

शुएब ने कहा ऐ मेरी क्रौम अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे (हलाल) रोज़ी खाने को दी है (तो मैं भी तुम्हारी तरह हराम खाने लगूँ) और मैं तो ये नहीं चाहता कि जिस काम से तुम को रोकूँ तुम्हारे बर खिलाफ (बदले) आप उसको करने लगूँ मैं तो जहाँ तक मुझे बन पड़े इसलाह (भलाई) के सिवा (कुछ और) चाहता ही नहीं और मेरी ताईद तो खुदा के सिवा और किसी से हो ही नहीं सकती इस पर मैंने भरोसा कर लिया है और उसी की तरफ रुजू करता हूँ

وَيَقُوْمُ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِىْٓ اَنْ يُصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ۚ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ ۚ ۚ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۚ ۚ

और ऐ मेरी क्रौमे मेरी ज़िद कही तुम से ऐसा जुर्म न करा दे जैसी मुसीबत क्रौम नूह या हूद या सालेह पर नाज़िल हुई थी वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आ पड़े और लूत की क्रौम (का ज़माना) तो (कुछ ऐसा) तुमसे दूर नहीं (उन्हीं के इबत हासिल करो

وَأَسْتَغْفِرُوْا ۚ رَبُّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْا ۚ ۚ اِلَيْهِ ۚ ۚ اِنْ رَبِّىْ رَحِيْمٌ ۚ ۚ وَدُوْدُ ۚ ۚ

और अपने परवरदिगार से अपनी मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसी की बारगाह में तौबा करो बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा मोहब्बत वाला मेहरबान है

قَالُوا ۖ يَشْعِيبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا ۖ اِمَّا تَقُولُ ۖ وَإِنَّا لَنَرِيكَ فِينَا ضَعِيفًا ۚ ا ۚ وَلَوْلَا
رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بَعِزٌّ ۚ

और वह लोग कहने लगे ऐ शुएब जो बाते तुम कहते हो उनमें से अक्सर तो हमारी समझ ही में नहीं आयी और इसमें तो शक नहीं कि हम तुम्हें अपने लोगों में बहुत कमजोर समझते हैं और अगर तुम्हारा कबीला न होता तो हम तुम को (कब का) संगसार कर चुके होते और तुम तो हम पर किसी तरह गालिब नहीं आ सकते

قَالَ يَقَوْمِ اَرْهَطِيْ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وِرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۚ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۚ

शुएब ने कहा ऐ मेरी कौम क्या मेरे कबीले का दबाव तुम पर खुदा से भी बढ़ कर है (कि तुम को उसका ये ख्याल) और खुदा को तुम लोगों ने अपने वास्ते पीछे डाल दिया है बेशक मेरा परवरदिगार तुम्हारे सब आमाल पर अहाता किए हुए है

وَيَقَوْمِ اَعْمَلُوا ۚ عَلَى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَمِلٌ ۚ ۚ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ ۚ
يُخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَذِبٌ ۚ ۚ وَاَرْتَقِبُوا ۚ اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۚ

और ऐ मेरी कौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) करो मैं भी (बजाए खुद) कुछ करता हूँ अनकरीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है जा उसको (लोगों की नज़रों में) रुसवा कर देगा और (ये भी मालूम हो जाएगा कि) कौन झूठा है तुम भी मुन्तिज़र रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार करता हूँ

وَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا ۚ ا وَالَّذِيْنَ ءَامَنُوْا ۚ مَعَهُ ۚ بِرَحْمَةٍ ۚ مِنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۚ الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوْا ۚ فِيْ دِيْرِهِمْ جُثَمِيْنَ

और जब हमारा (अज़ाब का) हुकम आ पहुँचा तो हमने शुएब और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से बचा लिया और जिन लोगों ने जुल्म किया था उनको एक चिंघाड़ ने ले डाला फिर तो वह सबके सब अपने घरों में औंधे पड़े रह गए

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا ۚ ۚ فِيْهَا ۚ ۚ اَلَا بُعْدٌ ۚ ا لِلْمَدِيْنِ كَمَا بَعْدَتْ ثَمُوْدُ

(और वह ऐसे मर मिटे) कि गोया उन बस्तियों में कभी बसे ही न थे सुन रखो कि जिस तरह समूद (खुदा की बारगाह से) धुत्कारे गए उसी तरह अहले मदियन की भी धुत्कारी हुई

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ ۙ مُّبِينٍ

और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलील देकर

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ فَاتَّبَعُوا ۙ أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۚ

फिरऔन और उसके अम्र (सरदारों) के पास (पैग़म्बर बना कर) भेजा तो लोगों ने फिरऔन ही का हुक्म मान लिया (और मूसा की एक न सुनी) हालाँकि फिरऔन का हुक्म कुछ जँचा समझा हुआ न था

يَقْدُمُ قَوْمَهُ ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأُورِدَهُمُ النَّارَ ۚ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ

क्रयामत के दिन वह अपनी क्रौम के आगे आगे चलेगा और उनको दोज़ख में ले जाकर झोंक देगा और ये लोग किस क़दर बड़े घाट उतारे गए

وَاتَّبَعُوا ۚ فِي هٰذِهِ ۚ لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ

और (इस दुनिया) में भी लानत उनके पीछे पीछे लगा दी गई और क्रयामत के दिन भी (लगी रहेगी) क्या बुरा इनाम है जो उन्हें मिला

ذٰلِكَ مِنْ اٰنَاۤءِ الْقُرٰى نَقْصُهُ ۚ عَلَيْكَ ۚ مِنْهَا قَائِمٌ ۚ وَحَصِيْدٌ ۚ

(ऐ रसूल) ये चन्द बस्तियों के हालात हैं जो हम तुम से बयान करते हैं उनमें से बाज़ तो (उस वक्त तक) कायम हैं और बाज़ का तहस नहस हो गया

وَمَا ظَلَمْنَهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْا ۚ اَنْفُسَهُمْ ۚ فَمَا اَغْنَتْ عَنْهُمْ ءَالِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُوْنَ مِنْ

دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ لَّمَّا جَاءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۚ

और हमने किसी तरह उन पर ज़ल्म नहीं किया बल्कि उन लोगों ने आप अपने ऊपर (नाफरमानी करके) ज़ुल्म किया फिर जब तुम्हारे परवरदिगार का (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो न उसके वह माबूद ही काम आए जिन्हें खुदा को छोड़कर पुकारा करते थे और न उन माबूदों ने हलाक करने के सिवा कुछ फायदा ही पहुँचाया बल्कि उन्हीं की परसतिश की बदौलत अज़ाब आया

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخْذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَلِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُ ۙ أَلِيمٌ ۚ شَدِيدٌ

और (ऐ रसूल) बस्तियों के लोगों की सरकशी से जब तुम्हारा परवरदिगार अज़ाब में पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही होती है बेशक पकड़ तो दर्दनाक (और सख्त) होती है

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ آلِ آخِرَةٍ ۚ ذَلِكَ يَوْمٌ ۚ مَّجْمُوعٌ ۚ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ ۚ مَّشْهُودٌ ۚ

इसमें तो शक नहीं कि उस शरूख के वास्ते जो अज़ाब आखिरत से डरता है (हमारी कुदरत की) एक निशानी है ये वह रोज़ होगा कि सारे (जहाँन) के लोग जमा किए जाएंगे और यही वह दिन होगा कि (हमारी बारगाह में) सब हाज़िर किए जाएंगे

وَمَا نُؤَخِّرُهُ ۙ إِلَّا لِأَجَلٍ ۚ مَّعْدُودٍ ۚ

और हम बस एक मुअय्युन मुदत तक इसमें देर कर रहे हैं

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ ۚ وَسَعِيدٌ ۚ

जिस दिन वह आ पहुँचेगा तो बग़ैर हुक्मे खुदा कोई शरूख बात भी तो नहीं कर सकेगा फिर कुछ लोग उनमें से बदबख्त होंगे और कुछ लोग नेक बख्त

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا ۚ فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ ۚ وَشَهِيقٌ

तो जो लोग बदबख्त हैं वह दोज़ख में होंगे और उसी में उनकी हाए वाए और चीख पुकार होगी

خُلْدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۚ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَالٌ ۚ لِّمَا يُرِيدُ

वह लोग जब तक आसमान और ज़मीन में हैं हमेशा उसी में रहेंगे मगर जब तुम्हारा परवरदिगार (नजात देना) चाहे बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है कर ही डालता है

﴿۱﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا ﴿۲﴾ فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ﴿۳﴾ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْذُونٍ ﴿۴﴾

और जो लोग नेक बख्त हैं वह तो बेहशत में होंगे (और) जब तक आसमान व ज़मीन (बाक़ी) है वह हमेशा उसी में रहेंगे मगर जब तेरा परवरदिगार चाहे (सज़ा देकर आखिर में जन्नत में ले जाए)

فَلَا تَكُ فِي مَرِيَةٍ ﴿۱﴾ مِمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ ﴿۲﴾ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِّن قَبْلُ ﴿۳﴾ وَإِنَّا لَمُوفُونَ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿۴﴾

ये वह बख़्शिश है जो कभी मनक़तआ (ख़त्म) न होगी तो ये लोग (ख़ुदा के अलावा) जिसकी परसतिश करते हैं तुम उससे शक़ में न पड़ना ये लोग तो बस वैसी इबादत करते हैं जैसी उनसे पहले उनके बाप दादा करते थे और हम ज़रूर (क़यामत के दिन) उनको (अज़ाब का) पूरा पूरा हिस्सा बग़ैर कम किए देंगे

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ﴿۱﴾ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ ﴿۲﴾ سَبَقَتْ مِّن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ﴿۳﴾ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ ﴿۴﴾ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿۵﴾

और हमने मूसा को किताब तौरैत अता की तो उसमें (भी) झगड़े डाले गए और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हुक्म कोइ पहले ही न हो चुका होता तो उनके दरमियान (कब का) फैसला यक़ीनन हो गया होता और ये लोग (कुफ़ारे मक्का) भी इस (कुरान) की तरफ से बहुत गहरे शक़ में पड़े हैं

وَإِنْ كُلاًّ ﴿۱﴾ لَّمَّا لِيُوفَيْنَهُمْ رَبُّكَ أَعْمَلَهُمْ ﴿۲﴾ إِنَّهُ ﴿۳﴾ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿۴﴾

और इसमें तो शक़ ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनकी कारस्तानियों का बदला भरपूर देगा (क्योंकि) जो उनकी करतूतें हैं उससे वह ख़ूब वाक़िफ़ है

فَأَسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ﴿۱﴾ إِنَّهُ ﴿۲﴾ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿۳﴾

तो (ऐ रसूल) जैसा तुम्हें हुक्म दिया है तुम और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ (कुफ़ से) तौबा की है ठीक साबित क़दम रहो और सरकशी न करो (क्योंकि) तुम लोग जो कुछ भी करते हो वह यक़ीनन देख रहा है

وَلَا تَرْكُنُوا ۚ إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ

और (मुसलमानों) जिन लोगों ने (हमारी नाफरमानी करके) अपने ऊपर जुल्म किया है उनकी तरफ माएल (झुकना) न होना और वरना तुम तक भी (दोज़ख) की आग आ लपटेगी और खुदा के सिवा और लोग तुम्हारे सरपरस्त भी नहीं हैं फिर तुम्हारी मदद कोई भी नहीं करेगा

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَى النَّهَارِ وَزُلْفًا ۚ مِّنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ

और (ऐ रसूल) दिन के दोनो किनारे और कुछ रात गए नमाज़ पढ़ा करो (क्योंकि) नेकियाँ यकीनन गुनाहों को दूर कर देती हैं और (हमारी) याद करने वालो के लिए ये (बातें) नसीहत व इबरेत हैं

وَأَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

और (ऐ रसूल) तुम सब्र करो क्योंकि खुदा नेकी करने वालों का अज़्र बरबाद नहीं करता

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا ۚ بَقِيَّةٍ ۚ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا ۚ مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مَا أُتْرِفُوا ۚ فِيهِ وَكَانُوا ۚ مُجْرِمِينَ

फिर जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनमें कुछ लोग ऐसे अक़ल वाले क्यों न हुए जो (लोगों को) रुए ज़मीन पर फ़साद फैलाने से रोका करते (ऐसे लोग थे तो) मगर बहुत थोड़े से और ये उन्हीं लोगों से थे जिनको हमने अज़ाब से बचा लिया और जिन लोगों ने नाफरमानी की थी वह उन्हीं (लज्ज़तों) के पीछे पड़े रहे और जो उन्हें दी गई थी और ये लोग मुजरिम थे ही

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ ۚ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ

और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा (बे इन्साफ़) कभी न था कि बस्तियों को जबरदस्ती उजाड़ देता और वहाँ के लोग नेक चलन हों

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً ۖ وَحِدَةً ۚ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ

और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो बेशक तमाम लोगों को एक ही (किस्म की) उम्मत बना देता (मगर) उसने न चाहा इसी (वजह से) लोग हमेशा आपस में फूट डाला करेंगे

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

मगर जिस पर तुम्हारा परवरदिगार रहम फरमाए और इसलिए तो उसने उन लोगों को पैदा किया (और इसी वजह से तो) तुम्हारा परवरदिगार का हुक्म क़तई पूरा होकर रहा कि हम यक़ीनन जहन्नुम को तमाम जिन्नात और आदमियों से भर देंगे

وَكُلًّا ۚ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ ۚ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ
الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ ۚ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ

और (ऐ रसूल) पैग़म्बरों के हालत में से हम उन तमाम किस्सों को तुम से बयान किए देते हैं जिनसे हम तुम्हारे दिल को मज़बूत कर देंगे और उन्हीं किस्सों में तुम्हारे पास हक़ (कुरान) और मोमिनीन के लिए नसीहत और याद दहानी भी आ गई

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا ۚ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ

और (ऐ रसूल) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कहो कि तुम बजाए खुद अमल करो हम भी कुछ (अमल) करते हैं

وَأَنْتَظِرُوا ۚ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ

(नतीजे का) तुम भी इन्तज़ार करो हम (भी) मुन्तिज़िर हैं

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ ۚ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا
رَبُّكَ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

और सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों का इल्म ख़ास खुदा ही को है और उसी की तरफ हर काम हिर फिर कर लौटता है तुम उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम लोग करते हो उससे खुदा बेख़बर नहीं

Yusuf

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

अलिफ़ लाम रा ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं

2

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۝ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

हमने इस किताब (कुरान) को अरबी में नाज़िल किया है ताकि तुम समझो

3

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْءَانَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ
قَبْلِهِ ۝ لَمِنَ الْغَافِلِينَ

(ऐ रसूल) हम तुम पर ये कुरान नाज़िल करके तुम से एक निहायत उम्दा किस्सा बयान करते हैं अगरचे तुम इसके पहले
(उससे) बिल्कुल बेखबर थे

4

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا ۝ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ
لِي سَاجِدِينَ

(वह वक्त याद करो) जब यूसूफ ने अपने बाप से कहा ऐ अब्बा मैंने ग्यारह सितारों और सूरज चाँद को (ख्वाब में) देखा है मैंने
देखा है कि ये सब मुझे सजदा कर रहे हैं

5

قَالَ يَبْنَى لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَى إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا ۝ لَكَ كَيْدًا ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ
لِلْإِنْسَنِ عَدُوٌّ ۝ مُبِينٌ ۝

याकूब ने कहा ऐ बेटा (देखो खबरदार) कहीं अपना ख्वाब अपने भाईयों से न दोहराना (वरना) वह लोग तुम्हारे लिए मक्कारी
की तदबीर करने लगेंगे इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है

6

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ ﴿٦﴾ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ
يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ﴿٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾

और (जो तुमने देखा है) ऐसा ही होगा कि तुम्हारा परवरदिगार तुमको बरगुज़ीदा (इज्जतदार) करेगा और तुम्हें ख्वाबो की ताबीर सिखाएगा और जिस तरह इससे पहले तुम्हारे दादा परदादा इबराहीम और इसहाक़ पर अपनी नेअमत पूरी कर चुका है और इसी तरह तुम पर और याकूब की औलाद पर अपनी नेअमत पूरी करेगा बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ा वाक्फ़िकार हकीम है

7

﴿٩﴾ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ ءَايَاتٌ ﴿١٠﴾ لِلْسَّائِلِينَ

(ऐ रसूल) यूसुफ़ और उनके भाइयों के किस्से में पूछने वाले (यहूद) के लिए (तुम्हारी नुबूवत) की यक़ीनन बहुत सी निशानियाँ हैं

8

إِذْ قَالُوا ﴿١١﴾ لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيْنَا أُمِينًا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ
مُبِينٍ

कि जब (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा कि बावजूद कि हमारी बड़ी जमाअत है फिर भी यूसुफ़ और उसका हकीकी भाई (इब्ने यामीन) हमारे वालिद के नज़दीक बहुत ज्यादा प्यारे हैं इसमें कुछ शक़ नहीं कि हमारे वालिद यक़ीनन सरीही (खुली हुई) ग़लती में पड़े हैं

9

أَقْتُلُوا ﴿١٢﴾ يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا ﴿١٣﴾ يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا ﴿١٤﴾ مِنْ ﴿١٥﴾ بَعْدِهِ ﴿١٦﴾
قَوْمًا ﴿١٧﴾ صَالِحِينَ

(ख़ैर तो अब मुनासिब ये है कि या तो) यूसुफ़ को मार डालो या (कम से कम) उसको किसी जगह (चल कर) फेंक आओ तो अलबत्ता तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और उसके बाद तुम सबके सब (बाप की तवज्जो से) भले आदमी हो जाओगें

10

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا ۖ يُوسُفَ وَأَلْقَوْهُ فِي غِيَبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ
إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ

उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ को जान से तो न मारो हाँ अगर तुमको ऐसा ही करना है तो उसको किसी अन्धे
कुएँ में (ले जाकर) डाल दो कोई राहगीर उसे निकालकर ले जाएगा (और तुम्हारा मतलब हासिल हो जाएगा)

11

قَالُوا ۖ يَأْبَاَنَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنُصِحُونَ

सब ने (याकूब से) कहा अब्बा जान आखिर उसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे में हमारा ऐतबार नहीं करते

12

أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا ۖ يَرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

हालाँकि हम लोग तो उसके खैर खाह (भला चाहने वाले) हैं आप उसको कुल हमारे साथ भेज दीजिए कि ज़रा (जंगल) से फल
वगैरह खाए और खेले कूदे

13

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا ۖ بِهِ ۖ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ

और हम लोग तो उसके निगेहबान हैं ही याकूब ने कहा तुम्हारा उसको ले जाना मुझे सख्त सदमा पहुँचाना है और मैं तो इससे
डरता हूँ कि तुम सब के सब उससे बेखबर हो जाओ और (मुबादा) उसे भेड़िया फाड़ खाए

14

قَالُوا ۖ لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخٰسِرُونَ

वह लोग कहने लगे जब हमारी बड़ी जमाअत है (इस पर भी) अगर उसको भेड़िया खा जाए तो हम लोग यक्रीनन बड़े घाटा
उठाने वाले (निकलते) ठहरेगें

15

فَلَمَّا ذَهَبُوا ۖ بِهِ ۖ وَأَجْمَعُوا ۖ أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غِيَبَتِ الْجُبِّ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ
بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

गरज़ यूसुफ को जब ये लोग ले गए और इस पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया कि उसको अन्धे कुएँ में डाल दें और (आखिर ये लोग
गुजरे तो) हमने युसुफ़ के पास 'वही' भेजी कि तुम घबराओ नहीं हम अनक़रीब तुम्हें मरतबे (उँचे मकाम) पर पहुँचाएंगे (तब
तुम) उनके उस फेल (बद) से तम्बीह (आगाह) करोगे

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً ۖ يَبْكُونَ

जब उन्हें कुछ ध्यान भी न होगा और ये लोग रात को अपने बाप के पास (बनवट) से रोते पीटते हुए आए

قَالُوا ۖ يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتْعِنَا ۖ فَاكْلَهُ الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ ۖ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ

और कहने लगे ऐ अब्बा हम लोग तो जाकर दौड़ने लगे और यूसुफ को अपने असबाब के पास छोड़ दिया इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया हम लोग अगर सच्चे भी हो मगर आपको तो हमारी बात का यकीन आने का नहीं

وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ ۖ كَذِبٍ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ ۖ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ

और ये लोग यूसुफ के कुरते पर झूठ मूठ (भेड़) का खून भी (लगा के) लाए थे, याकूब ने कहा (भेड़िया ने ही खाया (बल्कि) तुम्हारे दिल ने तुम्हारे बचाओ के लिए एक बात गढ़ी वरना कुरता फटा हुआ जरूर होता फिर सब व शुक्र है और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर खुदा ही से मदद माँगी जाती है

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ ۖ فَأَرْسَلُوا ۖ وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوُهُ ۖ قَالَ يَبْشَرِي هَذَا غُلْمٌ ۖ وَأَسْرُوهُ بَضْعَةً ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۖ بِمَا يَعْمَلُونَ

और (खुदा की शान देखो) एक काफ़ला (वहाँ) आकर उतरा उन लोगों ने अपने सक्के (पानी भरने वाले) को (पानी भरने) भेजा गरज़ उसने अपना डोल डाला ही था (कि यूसुफ उसमें बैठे और उसने खीचा तो निकल आए) वह पुकारा आहा ये तो लड़का है और काफ़ला वालो ने यूसुफ को कीमती सरमाया समझकर छिपा रखा हालाँकि जो कुछ ये लोग करते थे खुदा उससे खूब वाकिफ था

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ ۖ بَخْسٍ ۖ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ۖ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ

(जब यूसुफ के भाइयों को खबर लगी तो आ पहुँचे और उनको अपना गुलाम बताया और उन लोगों ने यूसुफ को गिनती के खोटे चन्द दरहम (बहुत थोड़े दाम पर बेच डाला) और वह लोग तो यूसुफ से बेज़ार हो ही रहे थे

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِمَرْأَتِهِ ۖ أَكْرَمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ ۚ
 وَلَدًا ۚ ا ۚ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ ۚ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ
 غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(यूसुफ को लेकर मिस्र पहुँचे और वहाँ उसे बड़े नफे में बेच डाला) और मिस्र के लोगों से (अज़ीजे मिस्र) जिसने (उनको खरीदा था अपनी बीवी (ज़ुलेखा) से कहने लगा इसको इज्जत व आबरु से रखो अजब नहीं ये हमें कुछ नफा पहुँचाए या (शायद) इसको अपना बेटा ही बना लें और यूँ हमने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) में (जगह देकर) क़ाबिज़ बनाया और ग़रज़ ये थी कि हमने उसे ख़्वाब की बातों की ताबीर सिखायी और खुदा तो अपने काम पर (हर तरह के) ग़ालिब व क़ादिर है मगर बहुतेरे लोग (उसको) नहीं जानते

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ ۚ ءَاتَيْنَاهُ حُكْمًا ۚ ا وَعِلْمًا ۚ ا ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

और जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचे तो हमने उनको हुक्म (नुबूवत) और इल्म अता किया और नेकी कारों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं

وَرُوْدَتْهُ أَلَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ
 اللَّهِ ۚ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

और जिस औरत ज़ुलेखा के घर में यूसुफ रहते थे उसने अपने (नाजायज़) मतलब हासिल करने के लिए खुद उनसे आरज़ू की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और (बे ताना) कहने लगी लो आओ यूसुफ ने कहा माज़अल्लाह वह (तुम्हारे मियाँ) मेरा मालिक हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह रखा है मैं ऐसा ज़ुल्म क्यों कर सकता हूँ बेशक ऐसा ज़ुल्म करने वाले फ़लाह नहीं पाते

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ
 وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ ۚ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ

ज़ुलेखा ने तो उनके साथ (बुरा) इरादा कर ही लिया था और अगर ये भी अपने परवरदिगार की दलील न देख चुके होते तो क्रुस्द कर बैठते (हमने उसको यूँ बचाया) ताकि हम उससे बुराई और बदकारी को दूर रखे बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से था

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ ۖ مِنْ دُبُرٍ ۖ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और दोनों दरवाजे की तरफ झपट पड़े और जुलेखा (ने पीछे से उनका कुर्ता पकड़ कर खीचा और) फाड़ डाला और दोनों ने जुलेखा के खाविन्द को दरवाजे के पास खड़ा पाया जुलेखा झट (अपने शौहर से) कहने लगी कि जो तुम्हारी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि या तो कैद कर दिया जाए

قَالَ هِيَ رُوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ ۖ مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ ۖ قَدْ مِّنْ قَبْلٍ ۖ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَذِبِينَ

या दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला कर दिया जाए यूसुफ ने कहा उसने खुद (मुझसे मेरी आरजू की थी और जुलेखा) के कुन्वे वालों में से एक गवाही देने वाले (दूध पीते बच्चे) ने गवाही दी कि अगर उनका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो ये सच्ची और वह झूठे

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ ۖ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ ۖ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

और अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो ये झूठी और वह सच्चे

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ ۖ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ ۖ قَالَ إِنَّهُ ۖ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ۖ

फिर जब अज़ीजे मिस्र ने उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी औरत से) कहने लगा ये तुम ही लोगों के चलत्तर है उसमें शक नहीं कि तुम लोगों के चलत्तर बड़े (ग़ज़ब के) होते हैं

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۖ وَأَسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ

(और यूसुफ से कहा) ऐ यूसुफ इसको जाने दो और (औरत से कहा) कि तू अपने गुनाह की माफी माँग क्योंकि बेशक तू ही सरतापा ख़तावार है

ۚ وَقَالَ نِسْوَةٌ ۖ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرْوَدُ فَتَلْهٰٓأ عَنْ نَّفْسِهِ ۖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرٰٓهَا فِي ضَلٰٓلٍ مُّبِينٍ ۖ

और शहर (मिस्र) में औरतें चर्चा करने लगी कि अज़ीज़ (मिस्र) की बीबी अपने गुलाम से (नाजायज़) मतलब हासिल करने की आरजू मन्द है बेशक गुलाम ने उसे उलफ़त में लुभाया है हम लोग तो यक़ीनन उसे सरीही ग़लती में मुब्तिला देखते हैं

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَكًّا ۖ وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ ۖ
 مِنْهُنَّ سِكِّينًا ۖ وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ ۖ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ
 حُشَّ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ ۖ كَرِيمٌ ۖ

तो जब जुलेखा ने उनके ताने सुने तो उस ने उन औरतों को बुला भेजा और उनके लिए एक मजलिस आरास्ता की और उसमें से हर एक के हाथ में एक छुरी और एक (नारंगी) दी (और कह दिया कि जब तुम्हारे सामने आए तो काट के एक फ़ाक उसको दे देना) और यूसुफ़ से कहा कि अब इनके सामने से निकल तो जाओ तो जब उन औरतों ने उसे देखा तो उसके बड़ा हसीन पाया तो सब के सब ने (बे खुदी में) अपने अपने हाथ काट डाले और कहने लगी हाय अल्लाह ये आदमी नहीं है ये तो हो न हो बस एक मुअज़्ज़िज़ (इज्ज़त वाला) फ़रिश्ता है

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رُودَتْهُ ۖ عَنْ نَفْسِهِ ۖ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِنْ لَّمْ
 يَفْعَلْ مَا ءَامُرُهُ ۖ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا ۖ مِنَ الصَّغِيرِينَ

(तब जुलेखा उन औरतों से) बोली कि बस ये वही तो है जिसकी बदौलत तुम सब मुझे मलामत (बुरा भला) करती थीं और हाँ बेशक मैं उससे अपना मतलब हासिल करने की खुद उससे आरज़ू मन्द थी मगर ये बचा रहा और जिस काम का मैं हुक्म देती हूँ अगर ये न करेगा तो ज़रूर कैद भी किया जाएगा और ज़लील भी होगा (ये सब बातें यूसुफ़ ने मेरी बारगाह में) अर्ज़ की

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ
 إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِنَ الْجَاهِلِينَ

ऐ मेरे पालने वाले जिस बात की ये औरतें मुझ से ख्वाहिश रखती हैं उसकी निस्वत (बदले में) मुझे कैद खानों ज्यादा पसन्द है और अगर तू इन औरतों के फ़रेब मुझसे दफा न फरमाएगा तो (शायद) मैं उनकी तरफ माएल (झुक) हो जाऊँ ले तो जाओ और जाहिलों से शुमार किया जाऊँ

فَاسْتَجَابَ لَهُ ۖ رَبُّهُ ۖ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۖ إِنَّهُ ۖ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

तो उनके परवरदिगार ने उनकी सुन ली और उन औरतों के मकर को दफा कर दिया इसमें शक़ नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक्फ़िकार है

ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ ۖ بَعْدِ مَا رَأَوْا ۚ أَلْءَايَتٍ لَيْسَ جَنَّهُ ۚ حَتَّىٰ حِينٍ ۚ

फिर (अजीज मिश्र और उसके लोगों ने) बावजूद के (यूसुफ की पाक दामिनी की) निशानियाँ देख ली थी उसके बाद भी उनको यही मुनासिब मालूम हुआ

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَالْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا ۖ تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۚ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۗ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

कि कुछ मियाद के लिए उनको कैद ही करे दें और यूसुफ के साथ और भी दो जवान आदमी (कैद खाने) में दाखिल हुए (चन्द दिन के बाद) उनमें से एक ने कहा कि मैंने ख्वाब में देखा है कि मैं (शराब बनाने के वास्ते अंगूर) निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा (मैं ने भी ख्वाब में) अपने को देखा कि मैं अपने सर पर रोटिया उठाए हुए हूँ और चिड़ियाँ उसे खा रही हैं (यूसुफ) हमको उसकी ताबीर (मतलब) बताओ क्योंकि हम तुमको यक़ीनन नेकी कारों से समझते हैं

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ ۖ تُرْزَقَانِهِ ۖ إِلَّا نَبَأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ ۚ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَلِكُمَا مِمَّا
عَلَّمَانِي رَبِّي ۚ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ ۚ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ

यूसुफ ने कहा जो खाना तुम्हें (कैद खाने से) दिया जाता है वह आने भी न पाएगा कि मैं उसके तुम्हारे पास आने के क़बूल ही तुम्हें उसकी ताबीर बताऊँगा ये ताबीरें ख़्वाब भी उन बातों के साथ हैं जो मेरे परवरदिगार ने मुझे तालीम फरमाई हैं मैं उन लोगों का मज़हब छोड़ बैठा हूँ जो खुदा पर ईमान नहीं लाते और वह लोग आखिरत के भी मुन्किर हैं

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ

और मैं तो अपने बाप दादा इबराहीम व इसहाक व याकूब के मज़हब पर चलने वाला हूँ मुनासिब नहीं कि हम खुदा के साथ किसी चीज़ को (उसका) शरीक बनाएँ ये भी खुदा की एक बड़ी मेहरबानी है हम पर भी और तमाम लोगों पर मगर बहुतेरे लोग उसका शक्रिया (भी) अदा नहीं करते

يُصْحَبِي السِّجْنَ ءَأَرْبَابٌ؟ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمْ اللَّهُ الْوَحْدُ الْقَهَّارُ

ऐ मेरे कैद खाने के दोनो रफीकों (साथियों) (ज़रा ग़ौर तो करो कि) भला जुदा जुदा माबूद अच्छे या खुदाएँ एकता ज़बरदस्त (अफसोस)

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ؟ إِلَّا أَسْمَاءٌ؟ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَءَابَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ؟ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ؟ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا؟ إِلَّا إِيَّاهُ؟ ذَلِكَ الدِّينُ الْقِيمُ وَلَكِنْ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

तुम लोग तो खुदा को छोड़कर बस उन चन्द नामों ही को परसतिश करते हो जिन को तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिया है खुदा ने उनके लिए कोई दलील नहीं नाज़िल की हुकूमत तो बस खुदा ही के वास्ते खास है उसने तो हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो यही सीधा दीन है मगर (अफसोस) बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं

يُصْحَبِي السِّجْنَ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ؟ خَمْرًا؟ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ؟ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ

ऐ मेरे कैद खाने के दोनो रफीको (अच्छा अब ताबीर सुनो तुममें से एक (जिसने अंगूर देखा रिहा होकर) अपने मालिक को शराब पिलाने का काम करेगा और (दूसरा) जिसने रोटियाँ सर पर (देखी हैं) तो सूली दिया जाएगा और चिड़िया उसके सर से (नोच नोच) कर खाएगी जिस अम्र को तुम दोनों दरयाफ्त करते थे (वह ये है और) फैसला हो चुका है

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَّ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ؟ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ

और उन दोनों में से जिसकी निस्बत यूसुफ ने समझा था वह रिहा हो जाएगा उससे कहा कि अपने मालिक के पास मेरा भी तज़क़िरा करना (कि मैं बेजुर्म कैद हूँ) तो शैतान ने उसे अपने आक्रा से ज़िक्र करना भुला दिया तो यूसुफ कैद खाने में कई बरस रहे

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ
 سُنُوبِلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا
 تَعْبُرُونَ

और (इसी असना (बीच) में) बादशाह ने (भी) ख्वाब देखा और) कहा मैंने देखा है कि सात मोटी ताज़ी गाए हैं उनको सात दुबली पतली गाय खाए जाती हैं और सात ताज़ी सब्ज बालियाँ (देखीं) और फिर (सात) सूखी बालियाँ ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों अगर तुम लोगों को ख्वाब की ताबीर देनी आती हो तो मेरे (इस) ख्वाब के बारे में हुक्म लगाओ

قَالُوا أَضْغَتْ أَحْلَمٌ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَمِ بِعُلَمِينَ

उन लोगों ने अर्ज की कि ये तो (कुछ) ख्वाब परेशों (सा) है और हम लोग ऐसे ख्वाब (परेशों) की ताबीर तो नहीं जानते हैं

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ

और जिसने उन दोनों में से रिहाई पाई थी (साकी) और उसको एक ज़माने के बाद (यूसुफ का क्रिस्ता) याद आया बोल उठा कि मुझे (क़ैद खाने तक) जाने दीजिए तो मैं उसकी ताबीर बताए देता हूँ

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
 سُنُوبِلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ

(गरज़ वह गया और यूसुफ से कहने लगा) ऐ यूसुफ ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ) ज़रा हमें ये तो बताइए कि सात मोटी ताज़ी गायों को सात पतली गाय खाए जाती है और सात बालियाँ हैं हरी कचवा और फिर (सात) सूखी मुरझाई (इसकी ताबीर क्या है) तो मैं लोगों के पास पलट कर जाऊँ (और बयान करूँ)

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا ۖ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنُبِهِ ۖ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا
 تَأْكُلُونَ

ताकि उनको भी (तुम्हारी क्रदर) मालूम हो जाए यूसुफ ने कहा (इसकी ताबीर ये है) कि तुम लोग लगातार सात बरस काश्तकारी करते रहोगे तो जो (फसल) तुम काटो उस (के दाने) को बालियों में रहने देना (छुड़ाना नहीं) मगर थोड़ा (बहुत) जो तुम खुद खाओ

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ ۙ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ ۙ شِدَادٌ ۙ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا ۙ ا مِمَّا
تُحْصِنُونَ

उसके बाद बड़े सख्त (खुशक साली (सूखे) के) सात बरस आएंगे कि जो कुछ तुम लोगों ने उन सातों साल के वास्ते पहले जमा कर रखा होगा सब खा जाएंगे मगर बहुत थोड़ा सा जो तुम (बीज के वास्ते) बचा रखोगे

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ ۙ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ ۙ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ

(बस) फिर उसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों के लिए खूब मेंह बरसेगी (और अंगूर भी खूब फलेगा) और लोग उस साल (उन्हें) शराब के लिए निचोड़ेंगे

وَقَالَ الْمَلِكُ أَتُؤْتُونِي بِهِ ۚ ۙ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ ۙ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ۙ

(ये ताबीर सुनते ही) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे हुज़ूर में तो ले आओ फिर जब (शाही) चौबदार (ये हुक्म लेकर) यूसुफ के पास आया तो यूसुफ ने कहा कि तुम अपनी सरकार के पास पलट जाओ और उनसे पूछो कि (आप को) कुछ उन औरतों का हाल भी मालूम है जिन्होंने (मुझे देख कर) अपने अपने हाथ काट डाले थे कि या मैं उनका तालिब था

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رُودْتُنَّ يُوسُفَ عَنِ نَفْسِهِ ۚ ۙ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ
سُوءٍ ۚ ۙ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا ۙ رُودَتْهُ ۙ عَنِ نَفْسِهِ ۙ
وَإِنَّهُ ۙ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ

या वह (मेरी) इसमें तो शक ही नहीं कि मेरा परवरदिगार ही उनके मक़ से खूब वाक़िफ है चुनान्वे बादशाह ने (उन औरतों को तलब किया) और पूछा कि जिस वक़्त तुम लोगों ने यूसुफ से अपना मतलब हासिल करने की खुद उन से तमन्ना की थी तो हमें क्या मामला पेश आया था वह सब की सब अर्ज करने लगी हाशा अल्लाह हमने यूसुफ में तो किसी तरह की बुराई नहीं देखी (तब) अज़ीज़ मिस्र की बीबी (ज़ुलेखा) बोल उठी अब तू ठीक ठीक हाल सब पर ज़ाहिर हो ही गया (असल बात ये है कि) मैंने खुद उससे अपना मतलब हासिल करने की तमन्ना की थी और बेशक वह यक़ीनन सच्चा है

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّي لَمْ اَخْنُهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِيْنَ

(ये वाक़िया चौबदार ने यूसुफ से बयान किया (यूसुफ ने कहा) ये क़िस्से मैने इसलिए छेड़ा) ताकि तुम्हारे बादशाह को मालूम हो जाए कि मैने अज़ीज़ की ग़ैबत में उसकी (अमानत में ख़यानत नहीं की) और खुदा ख़यानत करने वालों की मक्कारी हरगिज़ चलने नहीं देता